Nai Dunia (Indore), 20th February 2022, Page-01

तकनीक का कमाल

आइआइटी इंदौर और आईईटी का साझा नवोन्मेष, मशीनों में लगाने के लिए बनाया विशेष सेंसर

बायोमीट्रिक सिस्टम बता देगा फिंगर प्रिंट असली है या नकली

गजेंद्र विश्वकर्मा • इंदौर

नकली फिंगर प्रिंट का उपयोग कर होने वाले अपराधों की रोकथाम का तरीका भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) इंदौर ने खोज लिया है। आइआइटी और इंस्टीट्यूट आफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलाजी (आईईटी) के विज्ञानियों ने मिलकर फिंगर प्रिंट बायोमीट्रिक सिस्टम तैयार किया है। इस तकनीक की सहायता से बायोमीट्रिक मशीनों में ऐसा सेंसर लगाया जा सकेगा जो असली और नकली फिंगर प्रिंट की पहचान कर लेगा। व्यक्ति जैसे ही अपनी अंगुली स्कैनर पर रखेगा सेंसर उसकी पल्स (नाड़ी) भी पढ़ लेगा। इससे किसी मृत व्यक्ति के फिंगर प्रिंट के इस्तेमाल की आशंका भी समाप्त हो जाएगी।

रविवार विशेष

आइआइटी इंदौर की प्रयोगशाला जहां बायोमीट्रिक सेंसर पर शोध किया गया • सौ. संस्थान

नकली और असली फिंगरप्रिंट की पहचान करने में सफलता मिलने से आधार और बायोमीट्रिक से जुड़े सभी तरह के उपकरणों की सुरक्षा बेहतर हो सकेगी। शोध के आधार पर नई बायोमीट्रिक मशीनों का उत्पादन होने के बाद नकली या मृत व्यक्ति के फिंगरप्रिंट का उपयोग नहीं हो सकेगा। इस शोध को पेटेंट कराया गया है। शोध पर काम करने वाले देवी अहिल्या विवि के इंस्टीट्यूट आफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलाजी (आईईटी) के प्रो. शशि प्रकाश का कहना है कि नकली फिंगरप्रिंट का उपयोग गलत तरीके से रजिस्ट्री के मामले में भी किए जाने की आशंका बनी रहती है। विदेश में मृत व्यक्ति की अंगुली से धोखाधड़ी करने के कई मामले सामने आए हैं।

कई तकनीकी क्षेत्रों के विशेषज्ञों ने किया काम

प्रो. विमल भाटिया और देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के आइईटी के प्रो. शशिप्रकाश का कहना है कि यह ऐसा क्षेत्र है जिसमें कई विषयों की समझ रखने वालों की जरूरत थी। किसी एक क्षेत्र का विशेषज्ञ इस पर पूर्ण काम नहीं कर सकता था। इसमें मशीन लर्निंग, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और इमेज प्रोसेसिंग को समझने वालों की जरूरत थी। इसके चलते आइआइटी और विश्वविद्यालय ने मिलकर इस पर काम किया। इससे बेहतर परिणाम सामने आया।

प्रो. शशिप्रकाश

प्रो. विमल भाटिया

इस खबर को विस्तार से पढ़ने के लिए स्कैन करें